अफ़वाह फैलाना

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची
अनुवादकः सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी

इस्लाम इंसान को सच्चाई की तालीम देता है। इस सच्चाई की तीन सूरतें हैं। अमल की सच्चाई, दिल की सच्चाई और ज़बान की सच्चाई इस्लामी ज़िन्दगी इसी सच्चाई का दूसरा नाम है जिस में अमल, दिल और ज़बान की सच्चाई पाई जाती हो।

दिल और अमल की सच्चाई अगरचे अपनी जगह बड़ी अहमियत वाली है और बिना इसके इस्लामी समाज और इस्लामी ज़िन्दगी को सोचा ही नहीं जा सकता लेकिन ज़बान की सच्चाई इस वजह से और भी ज़्यादा अहमियत रखती है कि इस से पूरे समाज का ताल्लुक़ होता है और इसका असर सिर्फ़ एक ही ज़ात तक नहीं होता बल्कि दूसरे लोगों पर भी इसका असर होता है। अफ़वाह फैलाना इस्लामी ज़िन्दगी की बुनियादी तालीम यानी ज़बान की सच्चाई के ख़िलाफ़ है क्योंकि इसका मतलब यही होता है कि ग़लत ख़बरें बनाई जाएं और उनको अपने मक़सद हासिल करने के लिए फैलाया जाए। ज़ाहिर है कि ये चीज़ इस्लाम के बुनियादी ख़यालों से बिल्कुल अलग और बिल्कुल ख़िलाफ़ है। इस्लाम ये चाहता है कि इन्सान की कथनी-करनी में सच्चाई हो और दिलों को बुरे ख़यालों की गंदगी से पाक रखा जाए। अफ़वाह फैलाने की बुनियाद ही ये है कि उसकी कथनी-करनी, इरादे और अमल में सच्चाई न हो। क्योंकि अफ़वाह फैलाने वाला जानबूझ कर लोगों को धोका देता है, किसी बात को सही और दुरुस्त जानते हुए उसके ख़िलाफ़ दूसरी बातें मशहूर करने की कोशिश करता है जो सिर्फ़ ख़ास मक़सद को हासिल करने में उसकी मदद कर सकें इसलिए ये अफ़वाह फैलाना कथनी-करनी ओर अक़ीदे की सबसे बुरी मुनाफ़ेक़त का नाम है जिसमें सिर्फ़ एक ही बुराई और एक ही गुनाह नहीं होता बल्कि अफ़वाह फैलाने वाला एक ही वक़्त में कई संगीन जुर्मों और बुरे गुनाहों को करता है। एक तरफ़ वह झूठ बोलता है और ख़ुदा की लानत का हक़दार बनता है। ''बेशक जो लोग हमारी निशानियों और हमारी हिदायतों को छुपाते हैं इसके बाद कि हम ने उसे अपनी किताब में खोलकर बयान कर दिया है। उन पर ख़ुदा भी लानत भेजता है और सभी लानत करने वाले उन पर लानत करते हैं'' (सूरए बक़रा, 159) फिर इस तरह इरशाद हुआ है- ''हम झूठों पर अल्लाह की लानत भेजें'' (सूरए आले इमरान, रुकू-6)

दूसरी तरफ़ अफ़वाह फैलाने वाला चोरी का जुर्म करने वाला भी होता है। चोरी से मुराद सिर्फ़ माल ही की चोरी नहीं है बल्कि इसके मतलब का ताल्लुक़ इंसान के हर अमल से होता है अगर सच्ची बात को छुपाकर झूठी बात को मशहूर कर दिया जाए तो ये भी चोरी की सबसे बुरी शक्ल होगी। हर इंसान का फ़ितरी हक़ है कि उसको सच्ची बात बताई जाए और जो शख़्स सच्ची बात से उसे महरूम रखेगा वह उसके हक़ में चोरी करेगा। क़ुरआन करीम में है- ''बेशक ख़ुदा तुमको इसका हुक्म देता है कि तुम अमानतों को उन लोगों के पास पहुँचा दो जो उनके हक़दार हैं'' (सूरए निसॉ, 58/8) कन्ज़ुल उम्माल और दूसरी हदीस की किताबों में ये रिवायत मौजूद है- ''जिसमें अमानत नहीं उसमें ईमान नहीं'' इसलिए यक़ीनन ग़लत को सही बनाकर मशहूर करना, अमानतदारी के ख़िलाफ़ और सख़्त चोरी है जिसके बर्बादी भरे नतीजे

और असर सिर्फ़ एक ही शख़्स पर नहीं पड़ते बल्कि दूसरे बेगुनाह लोग भी इस जुर्म की बर्बादी से नहीं बच सकते और कितने ही इंसानों की ज़िन्दगी इसकी वजह से बर्बाद हो जाती है बल्कि कुछ घर या ख़ानदान ही नहीं मिटते बल्कि शहर, मुल्क और क़ौमें भी ख़त्म हो जाती हैं और इससे बढ़ कर भी मुमकिन है यानी ये कि इसके तबाही भरे असर सारी दुनिया को अपनी आग में लपेटकर तबाह व बर्बाद कर डालें और पूरे इंसानी समाज की बुनियादें ख़त्म कर दें। क्या हम नहीं देखते कि एक बहुत ही मामूली सी चिंगारी बस्तियों की बस्तियाँ जलाकर राख कर देती है हालांकि शुरु में एक चिंगारी और शोले की हैसियत देखने में कुछ भी नहीं होती। इसी तरह अफ़वाह फैलाना भी बुराई और तबाही की चिंगारी है जो शुरु में बहुत मामूली नज़र आती है और आख़िर में इसकी तबाहियों की कोई इन्तेहा नहीं रहती। ये लोगों की ज़िन्दगियाँ लूट लेता है, ख़ानदानों को बर्बाद करता है और मुल्कों और क़ौमों की बुलन्दियों को गहरे गढ़ों में हमेशा के लिए दफ़न कर देता है। इसी बड़े ख़तरे को सामने रख कर क़ुरआन करीम ने इंसानों को सच बोलने और सही बात करने की तालीम दी है और फ़िरक़ाबन्दी और अफ़वाह फ़ैलाने की लानत से बचाने की कोशिश की है। क़ुरआन का इरशाद है ''ऐ ईमान वालो! ख़ुदा से डरो और ठीक बात कहा करो'' ''अफ़वाह फैलाना'' दूसरों पर खुला हुआ ज़ुल्म है क्योंकि इस से उनके उस फ़ितरी हक़ की बर्बादी होती है कि उन्हें सही और सच्ची बात बताई जाए। ख़ुदा की किताब का आम एलान है कि ''ख़ुदा ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता'' (शूरा, आयत-40) इसी जगह पर फिर आयत 42 में ये फ़रमाया गया है- ''इल्ज़ाम तो बस उन्हीं पर होगा जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन पर नाहक़ ज़्यादती करते फिरते हैं इन ही लोगों के लिए दर्द देने वाला अज़ाब है'' इस अफ़वाह फैलाने से इंसान के समाजी निज़ाम में ख़तरनाक तौर पर नस्लकशी पैदा होती है। इस से लोगों के हुक़ूक़, इज़्ज़त और आबरू को नुक़सान पहुँचता है और क़तई तौर पर ये ''झूठी गवाही'' के दायरे में आता है जिसके लिए क़ुरआन का साफ़ एलान मौजूद है- ''झूठी बात करने से बचते रहो'' (हज, 30), अफ़वाह फ़ैलाना एक ऐसा गुनाह है और एक ऐसा बुरा अमल है जिसके हर रुख़ में और हर पहलू में बेइन्तहा ख़तरे छुपे हुए हैं और अगर इसकी रोकथाम में ज़रा भी ढिलाई से काम लिया जाए तो इसके ख़तरनाक नतीजे से आख़िर में इंसानी ज़िन्दगी के किसी भी हिस्से को बचाना मुमकिन नहीं रहता। बेशक ये बड़ी बुराई और सबसे बड़ी बुराई है और बुराई का फ़ैलाने वाला, उसको न रोकने वाला, उसको तरक़्क़ी देने वाला ये सब के सब इस आयत के ज़ेल में आते हैं- ''जो लोग ये चाहते हैं कि ईमानदारों में बुराई का फैलाव हो बेशक उनके लिए दुनिया और आख़िरत में बड़ा ही दर्द भरा अज़ाब है''। मुख़्तसर ये कि अफ़वाह फैलाना सिर्फ़ एक गुनाह और अकेली बुराई नहीं है बल्कि बुराईयों का एक बड़ा केन्द्र और संग्रह है। ये झूठ का फैलाना है, ये बड़ी ख़तरनाक मुनाफ़क़त है, दूसरे इंसानों पर खुला हुआ ज़ुल्म है, उनके साथ फ़रेब और धोका है, अपने ज़मीर और दूसरे बेगुनाह इंसानों के एहसास और समझ से ग़द्दारी है, सच्चाई के ख़िलाफ़ बग़ावत का एलान है और अल्लाह के इरादे और उसके हुक्म से नाफ़रमानी है इस बड़े अकेले गुनाह की सज़ा और इसका बुरा नतीजा सिर्फ़ एक शख़्स या कुछ लोगों तक ही नहीं रहता बल्कि अफ़वाह फैलाने वाला एक हो या एक से ज़्यादा हों उन पर लातादाद इंसानों के गुनाहों का बोझ भी होगा जो इस अफ़वाह फैलाने के शिकार होंगे।

बेकार बातों से बचना

इस्लाम ने जहाँ इंसान को तहज़ीब व तमद्दुन के वह सभी मेयारी उसूल बताए हैं जिन पर उसकी इन्फ़ेरादी और इज्तेमाई ज़िन्दगी टिकी हुई है साथ ही उसे अख़लाक़ के भी ऐसे सबक़ दिये हैं जो उसकी ज़िन्दगी के हर हिस्से को घेरे हुए हैं। इज्तेमाई ज़िन्दगी में जिस चीज़ से इंसान को हर वक़्त वास्ता पड़ता है वह उसकी बातचीत है। इसके बिना वह अपने मतलब को ज़ाहिर नहीं कर सकता और अपने जज़्बात का इज़हार नहीं कर सकता। कभी बातीचीत की जगह कुछ और तरीक़े भी हो सकते हैं लेकिन सीधे तौर पर जो चीज़ ख़यालात और जज़्बात के इज़हार का ज़रिया है वह

इंसान की ज़बान ही है। इस ज़बान से कभी बड़े ख़ौफ़नाक तूफ़ान भी उठते हैं और कभी वह तूफ़ान भूले हुए ख़्वाब भी हो जाते हैं। इसी ज़बान से आग के शोले भड़कते हैं तो कभी ख़ून की बारिश होती है और कभी लाशों के अम्बार लग जाते हैं और कभी वह शोले ठण्डक और सलामती बन कर अम्न व सलामती का पैग़ाम भी बन जाते हैं और यही तो वह वसीला है जिस से इंसान के वह छुपे जौहर खुलकर सामने आ जाते हैं जो किसी और ज़रिए से ज़ाहिर नहीं हो सकते।

अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली[अ०] फ़रमाते हैं:- ''इंसान अपनी ज़बान के नीचे छुपा हुआ है'' यानी हर आदमी की असली क़ाबलियत और सलाहियत और अच्छाई और बुराई सब कुछ उसकी ज़बान ही से ज़ाहिर हो जाता है। जब तक ख़ामोश है पता नहीं चलता कि उसका चाल-चलन, उसकी इल्मी और अख़लाक़ी हैसियत क्या है। मगर जब वह बात करता है तो इसका फ़ौरन पता चल जाता है और ताड़ने वाले फ़ौरन ताड़ जाते हैं कि ये शख़्स कितने पानी में है और किस तरह की आदतें और किस हद तक सलाहियत रखता है। क़ुरआन पाक और रसूल की हदीसों में इसी लिए बार-बार अच्छी बात करने पर ज़ोर दिया गया है और बेकार और फ़ुज़ूल बातचीत से परहेज़ करने का हुक्म दिया गया है। सूरए असरा में अल्लाह ने फ़रमाया, ''ऐ रसूल[स०] मेरे बन्दों से कहो कि वह हमेशा ऐसी बात किया करें जो बहुत ही भली हो। इसी तरह अल्लाह ने ऐसी बातचीत से रोका है जिसमें बुरी बातों और बेकार बातों का ज़रा सा भी हिस्सा मौजूद हो। सूरए बक़रा में इन लफ़्ज़ों के साथ अच्छी बात की तालीम दी गई है- ''लोगों से ऐसे अंदाज़ में और ऐसे तरीक़े से बातचीत किया करो जो भला और अच्छा हो।'' एक दिन रसूल[स०] अपने सहाबा के मजमे में जन्नत की बात कर रहे थे, किसी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल[स०]! जन्नत किसको मिलेगी तो आपने फ़रमाया कि उसे मिलेगी जिसकी बातचीत का तरीक़ा भला हो, जो भूकों को खिलाए। एक दूसरी हदीस में हुज़ूर[स०] ने फ़रमाया है कि अच्छी और भली बात कहना ''सदक़ा'' है यानी ऐसा काम है जो ख़ुदा के दरबार में क़रीब होने का ज़रिया बनता है। बहरहाल इंसानी ज़िन्दगी के सभी अकेले और इज्तेमाई पहलुओं में बातचीत का तरीक़ा और बात करने के अंदाज़ का बड़ा दख़ल होता है। एक सहाबी ने रसूल[स०] ने पूछा, हुज़ूर मेरे लिए कौन सी चीज़ सबसे ज़्यादा ख़तरनाक है, तो आपने फ़रमाया कि वह तुम्हारी ज़बान है। जहाँ तक क़ुरआन हकीम का ताल्लुक़ है इस सिलसिले में कुछ आयतें और भी हैं जिन से इसकी सख़्ती से हिदायत मिलती है कि आदमी को अपनी बातचीत उन तमाम बातों से पाक रखना चाहिए जो अख़लाक़ी और दीनी हैसियत से ठीक और जाएज़ न हों। सूरए अहज़ाब में अल्लाह का फ़रमान है- ''ऐ ईमान वालो! जब कोई बात कहो तो ठीक तरह से कहा करो'' इसी तरह सूरए हज में है- ''झूठी बात कहने से हमेशा बचते रहो''। ज़ाहिर है कि जिस तरह ''ठीक बात'' में हर तरह की सही और दरमियानी बातचीत शामिल है ''झूठी बात'' में भी हर तरह की झूठी और ग़लत बात शामिल होगी। फिर जब इंसान बेकार बातें करेगा तो उसकी बातचीत किसी तरह भी उन अख़लाक़ी बुराईयों से बची नहीं रह सकती जो उसे ''झूठी बात'' में शामिल होने से बचा सकें।

ख़ुलासा ये हुआ कि बेकार बातचीत हर तरह से इस्लामी तहज़ीब और इस्लामी तालीम के बिल्कुल ख़िलाफ़ है।

अच्छी बात करना

सरवरे काएनात[स०] का इरशाद है- ''सच्चा मुसलमान वही शख़्स है जिसकी ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान बचे रहें। अल्लामा निसाई ने इसको इस तरह रिवायत किया है, ''हुज़ूर[स०] ने फ़रमाया कि हक़ीक़ी मुसलमान वही है जिसकी ज़बान और हाथ से दूसरे लोग बचे रहें।

हुज़ूर[स०] एक दिन बातचीत कर रहे थे, सहाबियों में से किसी ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल[स०]! जन्नत किसको मिलेगी? तो आप[स०] ने फ़रमाया कि जिस मुसलमान की बातचीत का तरीक़ा भला हो, जो भूकों को खाना खिलाए, अक्सर रोज़े रखता हो और रात में ऐसे वक़्त नमाज़ें पढ़े जब दुनिया सोती हो। एक और हदीस में सरकारे दो आलम[स०] ने फ़रमाया है कि अच्छी और

नेक बात कहना सदक़ा है। यानी जिस तरह सदक़ा देने से किसी ज़रूरत वाले और मोहताज की मदद होती है उसी तरह मीठी ज़बान से उसकी तसल्ली भी होती है और उसके ज़ख़्मों का इलाज भी हो सकता है। एक बार एक सहाबी ने हुज़ूर अनवर[स०] से पूछा कि मेरे लिए कौन सी चीज़ सबसे ज़्यादा ख़तरनाक है तो आप ने फ़रमाया कि वह तुम्हारी ज़बान है। इन सभी हदीसों से हासिल ये है कि इंसानी ज़िन्दगी की इन्फ़ेरादी और इज्तेमाई तमाम पहलुओं में बातचीत का तरीक़ा और बातचीत के अंदाज़ का बड़ा हिस्सा है और बहुत ज़्यादा अहमियत है और यही वह मेयार और आईना है जिसमें इंसान की शख़सियत, क़ाबलियत, सीरत और किरदार, तहज़ीब व तरबियत, अख़लाक़ व आदात, कैफ़ियत और जज़्बात, नक़्स व कमाल, अच्छाई और बुराई की पूरी-पूरी तस्वीर सामने आती है और उसकी शख़सियत के छिपे हुए नुक़ूश उभरकर सामने आ जाते हैं।

अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली[अ०] ने फ़रमाया है, ''इंसान अपनी ज़बान के नीचे छुपा हुआ है'' जिसका मतलब यही हुआ कि हर शख़्स की असली शख़सियत का सही अन्दाज़ा उसकी बातचीत से ही हो जाता है और उसकी वह कमज़ोरियाँ और ख़ूबियाँ जो छुपी हुई होती हैं उसकी ज़बान उन्हें सामने ले आती है। इस बयान का लाज़मी नतीजा यही निकलता है कि बुरी बात और ग़ैरमुनासिब और बद्तमीज़ी से बातचीत करने वाले इंसान को इस्लामी तहज़ीब और इस्लामी तालीम व तरबियत से दूर का भी इलाक़ा और वास्ता नहीं होता। इमाम अबूजाफ़र मुहम्मद बाक़िर[अ०] फ़रमाते हैं कि अल्लाह उस शख़्स का दुश्मन है जो बद-ज़बान हो, ज़बान ज़्यादा चलाने वाला हो। गाली-गलौज और गंदी बात करने वाला हो। हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया है, लोगों से तुम भी उसी बेहतरीन अंदाज़ पर कलाम किया करो जिस तरह तुम खुद चाहते हो कि लोग तुम से अच्छे तरीक़े पर बातचीत करें और अपनी ज़बानों को बुरी बात और बुरे बातचीत के अंदाज़ से बचाए रखो। ग़रज़ इस्लाम ने मुसलमानों को इसकी तालीम दी है कि वह जिस से भी बातचीत करें ऐसे अंदाज़ से करें जो बहुत ही भला और पसन्दीदा हो। अल्लाह ने सूरए बक़रा में फ़रमाया है: ''लोगों से अच्छे तरीक़े पर बातचीत किया करो'' इस ख़ुदाई फ़रमान में बातचीत के सभी पहलू मौजूद हैं यानी ये कि जिस शख़्स से बाती की जाए उसकी इज़्ज़त व शख़सियत और मक़ाम व दर्जे का ख़याल रखा जाए, जो बात कही जाए वह सच्चाई, हक़ीक़त और ख़ुलूस की बुनियाद पर हो, उसमें बनावट न हो, ख़ुशामद न हो, फ़रेब न हो, और झूठ न हो और ऐसे तरीक़े पर न हो कि सुनने वालों को बुरा लगे और उनके दिलों को तकलीफ़ पहुँचे बल्कि इस अंदाज़ से हो कि बिगड़े हुए ताल्लुक़ात अच्छे हो सकें, उलझे हुए काम सुलझ सकें और घटी हुई मुहब्बत व उलफ़त बढ़ सके। ऐसा न हो कि मुहब्बतव भाईचारगी के रहे सहे रिश्ते भी टूट जाएं और दोस्ती व सच्चाई में बढ़ोत्तरी होने के बजाए आपस में दुश्मनी पैदा हो जाए या उसमें बढ़ोत्तरी हो जाए। बेशक बात में बड़ा असर होता है। ये ख़ुश भी कर सकती है और ग़मगीन भी बना सकती है, हंसा भी सकती है रुला भी सकती है, ये दीवानों को होश में भी ला सकती है, ये बर्बाद भी कर सकती है और दम तोड़ने वालों को ज़िन्दगी भी दे सकती है। इसीलिए क़ुरआन व हदीस में इस पर ज़ोर दिया गया है कि मुसलमान सख़्त बात और दिल तोड़ने वाले अंदाज़ से बातचीत करने से बचें और इस तरह बात न करें कि सुनने वालों को इस से रंज पहुँचे और बजाए मुहब्बत पैदा होने के आपस में दुश्मनी, इख़्तेलाफ़ात, ग़लतफ़हमी और मुनाफ़ेक़त पैदा हो। अल्लाह ने हज़रत मूसा[अ०] और हज़रत हारून[अ०] को हुक्म दिया था कि फ़िरऔन जैसे काफ़िर व मुश्रिक से भी बात करें तो बहुत ही नर्मी के साथ करें। सूरए ताहा में अल्लाह ने फ़रमाया है, यानी ''ऐ मूसा व हारून जब तुम फ़िरऔन के पास तबलीग़ के लिए जाओ तो उस से बहुत ही नर्मी के साथ बात करना ताकि वह तुम्हारी नसीहत मान ले या डर ही जाए। इस ख़ुदाई हुक्म से ये बात अच्छी तरह समझ में आ जाती है कि नबी से लेकर एक आम मुसलमान तक सब ही के लिए इस्लाम ने नर्म बातचीत और अच्छी बोलचाल के अंदाज़ को ज़रूरी क़रार दिया है।